जेल में भविष्य की रोशनी

इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे कैदी, प्रोफेसर जाते हैं पढ़ाने

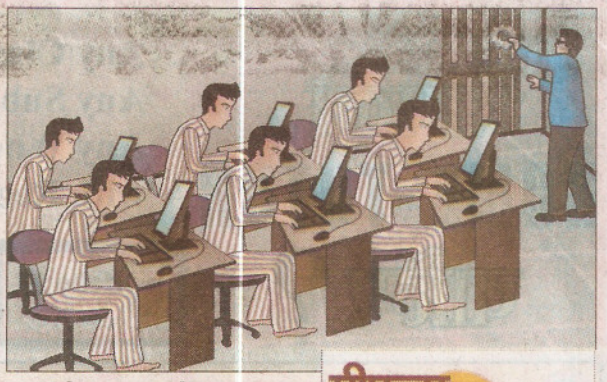

पीपुल्स एक्सक्लूसिव

राजेश व्यास, भोपाल।

इसे विपरीत परिस्थितियों में हौंसले का जीता-जाता उदाहरण कह सकते हैं। अपने किसी गलत कदम की वजह से आज वे जेल की सलाखों के पीछे जिंदगी बिता रहे हैं, लेकिन इसमें भी वे जिंदगी को रोशन बनाने का प्रयास कर रहे हैं। बात हो रही है भोपाल की सेंट्रल जेल में बंद उन 109 कैदियों की जो सजा काटने के साथ ही इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी कर रहे हैं। पिछले सेमेस्टर एक्जाम में इनमें से 20 ने टॉप भी किया था।

इन कैदियों को पढ़ाने के लिए जेल में ही प्रोफेसर भी आते हैं। पिछले सेमेस्टर में टॉप करने वाले कैदियों ने 900 में से 700 के ऊपर अंक प्राप्त किए। शेष अन्य विद्यार्थियों में से मात्र 3 फेल हुए हैं। इनमें से दो बंदी रिहा हो चुके हैं। प्रशिक्षित कैदियों को केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सिलचर (असम) द्वारा डिप्लोमा मिलेगा। इतना ही नहीं, उन्हें रिहाई के बाद नई दिल्ली की निर्माण उद्योग विकास परिषद (सिडसी) से संपर्क करने पर रोजगार के अवसर भी दिए जाएंगे।

जेल में यह पाठ्यक्रम शासन ने 31 मार्च 2008 को लागू कराया था। उस दौरान 141 बंदियों ने पढ़ाई शुरू की थी। इनमें से प्रथम सेमेस्टर में 61 बंदी पास हुए। 80 बंदियों को पूरक सूची में शामिल कर पास कर दिया गया। वर्तमान में 109 कैदी पढ़ रहे हैं। शेष रिहा हो चुके हैं। डिप्लोमा इंजीनियरिंग कर रहे इन कैदियों को जेल में पढ़ाई की सभी सुविधाएं दी गई हैं। मसलन, पढ़ाई कक्ष में फर्नीचर, 6 कम्प्यूटर, प्रशिक्षण देने के लिए प्रोफेसर आदि। यहां सिविल में 49, इलेक्ट्रिकल में 49 और मैकेनिकल में 49 सीटें हैं।

898 कैदी भी पढ़ रहे

जेल में 898 बंदी अन्य विषयों की पढ़ाई कर रहे हैं। इनमें से 243 ऐसे हैं जो जेल आए थे तब तो निरक्षर थे, लेकिन अब साक्षर हो चुके हैं। कुल 30 बंदी टाइपिंग सीख रहे हैं। 21 बंदी एमबीए, 08 बंदी डीसीए कर रहे हैं। 60 कैदी संगीत की शिक्षा ले रहे हैं। 70 कैदी मेट प्रशिक्षण ले चुके हैं। 63 कैदियों को हाल ही में दिए गए चित्रकला के परीक्षा के परिणाम का इंतजार है। इसके अलावा 112 कैदी अभियांत्रिकी डिप्लोमा प्रशिक्षण कर रहे हैं।

पीपुल्स समाचार
दिनांक - 12/07/2010